स्मृति से संसार का परिवर्तन

हमेशा ही मनुष्य को स्मृति रहती है। एक स्मृति है जो चेतना में रहती ,दूसरी स्मृति है जो संस्कार के रूप में होती है, जो अर्धचेतन या अचेतन मन में होती है। इन स्मृतियों को काटने के लिए बाबा ने हमें नयी स्मृति दी, श्रेष्ठ स्मृति दी, पॉज़िटिव स्मृति दी। स्मृति को काटने के लिए दूसरी स्मृति दी, उसी का नाम 'योग' है।

संस्कार मनुष्य को कैसे प्रभावित करता है? संस्कार प्रभावित करता है दृष्टि और वृत्ति के रूप में। संस्कार गुप्त चीज़ है, हमें पता ही नहीं पड़ता कि वह कैसे प्रभावित करता है। हम किसी व्यक्ति को वैसी दृष्टि से देखेंगे जैसा हमारा संस्कार होगा। किसी का काम वाला संस्कार होगा तो उसके नेत्रों को संस्कार कामाधीन कर देगा। वह देखेगा तो देह को देखेगा, देह की तरफ आकर्षित होगा। उसकी वृत्ति वासना वृत्ति हो जायेगी, काम वृत्ति हो जायेगी। क्रोधी की क्रोध वृत्ति हो जायेगी और लोभी की लोभ वृत्ति हो जायेगी। इस प्रकार संस्कार दो तरीके से प्रभावित करता है, एक दृष्टि और दूसरी वृत्ति। संस्कार है क्या चीज़? संस्कार है एक गुप्त स्मृति। संस्कार वो स्मृति है जो पहले किये गये कर्मों से जुड़ी है। एक बार किया, दुबारा किया, तिबारा किया और उसकी स्मृति को हम समाते गये। उसको रिफ्लेक्स एक्शन(प्रतिक्षेप क्रिया) कहते हैं। जैसे हम साइकिल चलाना सीखते हैं। उसका संतुलन रखने का ध्यान देते हैं। पहले एक बार चलाते हैं, फिर चलाते हैं, रोज़ चलाना शुरू करते हैं। आखिर वह हमारी स्मृति में बैठ जाता है कि साइकिल कैसे चलाना है। फिर उसको याद करने की हमें ज़रूरत नहीं पड़ती। साइकिल पर बैठने से ही, अपने आप पाँव चलाना शुरू कर देते हैं, हाथ हैण्डल घुमाना शुरू करते हैं। संस्कार ऐसा बन गया कि जो काम हम बार-बार करते रहे, उसकी स्मृति हमारी चेतना या अर्ध चेतना में नहीं है, फिर भी वह स्मृति में है गुप्त रूप में। वह हमारे ध्यान से ओझल है, फिर भी है, हमारी दृष्टि और वृत्ति को प्रभावित करता है। जब तक उसको आप ठीक नहीं करेंगे तब तक आप ठीक नहीं होंगे। उसके लिए बाबा ने हमें क्या तरीका बताया? बाबा ने हमें विचार दिया कि कौन-सा संकल्प-संस्कार अच्छा है, कौन-सा खराब है और संस्कारों को बदलना क्यों ज़रूरी है। इस चीज़ का हमें पता चल गया।

स्मृति में है बहुत बड़ी शक्ति

स्मृति के बगैर कोई भी काम संसार में नहीं हो सकता। कोई भी व्यक्ति नहीं है जिसको कोई स्मृति नहीं है जब तक कि वह मर न जाये।

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

डॉक्टर्स कहते हैं कि यह मूर्छित है लेकिन फिर भी अन्दर कुछ न कुछ चलता रहा है। उस स्मृति की अभिव्यक्ति बाहर नहीं होती। नींद में भी मनुष्य को स्मृति होती है, यहाँ तक कि वह सपने देखता रहता है। स्वप्न में भी उसको अनेक प्रकार की स्मृतियाँ आती हैं इस जन्म की और पूर्व जन्म की। दोनों स्मृतियों के मिश्रण से मदारी के खेल जैसा स्वप्न उसको आता रहता है। हमेशा ही मनुष्य को स्मृति रहती है। एक स्मृति है जो चेतना में रहती ,दूसरी स्मृति है जो संस्कार के रूप में होती है, जो अर्धचेतन या अचेतन मन में होती है। इन स्मृतियों को काटने के लिए बाबा ने हमें नयी स्मृति दी, श्रेष्ठ स्मृति दी, पॉज़िटिव स्मृति दी। स्मृति को काटने के लिए दूसरी स्मृति दी, उसी का नाम 'योग' है। लोग योग के नाम पर एकाग्रता करने लगे, प्राणायाम, हठयोग करने लगे। उससे कोई जीवन परिवर्तित नहीं हुआ। शरीर ठीक हुआ, चलो अच्छी बात है लेकिन विश्व परिवर्तन की जो बात है, वह हुई नहीं। उससे न अच्छे विचार मिले, न अच्छी स्मृति मिली। बाबा ने हमें यह चीज़ दी कि स्मृति में स्थित रहना ही 'योग' है। योग की कितनी ही किताबें उठाकार आप देख लीजिये। किसी ने भी नहीं कहा है कि 'स्मृति में स्थित रहना ही योग है'। बाबा ने योग की जो व्याख्या दी है, यह दुनिया में अनुपम है, बेमिसाल है।

स्मृति में इतनी बड़ी शक्ति है कि संस्कार में क्रान्ति ला सकते हैं। लोगों ने दुनिया में क्रान्ति लाने की कोशिश की। गोल्डन रेवोलूशन, ग्रीन रेवोलूशन, व्हाइट रेवोलूशन इत्यादि। लेकिन उससे क्या हुआ? संसार में परिवर्तन आया? समाज में सुधार हुआ? क्रान्ति होनी चाहिए मनुष्य का व्यवहार बदलने की, मनुष्य के संस्कार बदलने की, मनुष्य की स्मृति बदलने की। तब जाकर संसार बदलेगा, विश्व में सुख और शांति आयेगी। स्मृति से विश्व में परिवर्तन आ सकता है। बिना स्मृति कोई कुछ कर ही नहीं सकता। बाबा की शिक्षा हमारे संग रहे इसका अर्थ क्या है? बाबा की शिक्षाओं की स्मृति हमें रहे। स्मृति हमारी कितनी बड़ी शक्ति है!

नवा रायपुर से.20-अटलनगर(छ.ग.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शान्ति शिखर भवन में आयोजित 'द्वादश ज्योतिर्लिंग दर्शन' का शुभारंभ करते हुए विधायक एवं संसदीय सचिव विकास उपाध्याय, गृह सचिव,आईपीएस अरुण देव गौतम, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल के महानिरीक्षक साकेत कुमार सिंह, संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी व ब्र.कु. सविता दीदी।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जिला जेल में बंदी भाई-बहनों के लिए त्रिदिवसीय राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. मोहिनी बहन व ब्र.कु. कल्पना बहन ने आध्यात्मिक ज्ञान, राजयोग मेडिटेशन एवं कर्म सिद्धांत से सभी को परिचित कराया। इस मौके पर जेल अधीक्षक कुलश्रेष्ठ, जेलर राम शिरोमणि पांडे, बंदी शिक्षक उमेश सिंह सहित समस्त स्टाफ व बंदी भाई-बहनें उपस्थित रहे।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर 21दिवसीय योग भट्ठी कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए मा.आबू से गायक ब्र.कु. रमेश भाई, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला दीदी, समाजसेवी शंकर साहू, म.प्र. विद्युत मंडल के पूर्व डायरेक्टर विजय तिवारी तथा अन्य।

व्यारा-गुज.। शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए शिल्पा बहन,आईटीआई कॉलेज प्रिंसिपल, नरेश भाई,जेबी हाई स्कूल प्रिंसिपल, साधना बहन,के.के. कदम हाई स्कूल, ब्र.कु. अरुणा बहन तथा ब्र.कु. दीपा बहन।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। 87वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् प्रतिज्ञा करते हुए महापौर प्रहलाद पटेल, संस्थान की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, ब्र.कु. अनीता दीदी, नगर परिषद् उपाध्यक्ष पूजा योगी, ब्र.कु. सविता दीदी तथा अन्य भाई-बहनें।

नवी मुम्बई-उलवे। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए सुमित शर्मा,आईटी प्रोफेशनल, ब्र.कु. शीला दीदी, अंजली कोली,उलवे जिला परिषद हाई स्कूल, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. लक्ष्मी व अन्य।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। होमगार्ड एसडीईआरएफ द्वारा जटाशंकर पैलेस में आयोजित आपदा मित्र योजना आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण में मेडिटेशन सिखाने के लिए ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किया गया। इस मौके पर ब्र.कु. कल्पना बहन, ब्र.कु. रीना बहन, ब्र.कु. धीरज भाई, होम कमांडेट करण सिंह, समस्त स्टाफ एवं युवा आपदा मित्रगण उपस्थित रहे।

मुम्बई-भांडुप वेस्ट। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'द्वादश ज्योतिर्लिंग आध्यात्मिक मेला' का उद्घाटन करने के पश्चात् कमांडर सर्जन दीप कमल ठाकुर,नेवल हॉस्पिटल पवई एनसीएच कॉलोनी एवं कमांडर सर्जन वैदेही ठाकुर,नेवल हॉस्पिटल पवई एनसीएच कॉलोनी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लाजवंती बहन।